

सनातन हस्तशिल्प उद्योग का पुनरुत्थान

तनिषा आचार्य

पूर्वस्नातक, राजनीतिशास्त्र विभाग

डॉ. विश्वनाथ कराड एम.आई. टी. विश्वशांति विश्वविद्यालय

पुणे, महाराष्ट्र

इकाई की रूपरेखा

1. प्रस्तावना
2. प्राचीन व्यवसायों का पुनरुत्थान - महत्ता एवं आवश्यकता
3. भारत का हस्तशिल्प उद्योग - परिचय एवं इतिहास
4. भारतीय घरेलू बाजार में हस्तशिल्प उद्योग की परिस्थिति
5. विदेश में मांग - भारतीय हस्तकला का निर्यात
6. हस्तशिल्प का पुनरुत्थान - चुनौतियाँ एवं अवसर
7. हस्तशिल्प उद्योग में रोजगार - इतिहास एवं भावी संभावनाएं
8. निष्कर्ष
9. संदर्भ सूची

प्रस्तावना

भारतवर्ष; मानव सभ्यता और संस्कृति का केंद्र। जब विश्व को कुछ भी ज्ञात नहीं था, तब भारत एक अत्यंत विकसित सभ्यता के रूप में उभर चुका था। इस देश ने, संपूर्ण विश्व को एक साथ आगे बढ़ने का तरीका सिखाया। भारत में, उस समय ही, आर्थिक एवं सामाजिक रूप से काफी समृद्ध, हाथ से काम करने वाले शिल्पकार, व्यवसाय चलाने वाली जातियां थीं।

हस्तशिल्प उद्योग सदियों से भारत की सांस्कृतिक और कलात्मक धरोहर का दर्पण रहा है। इस शोध पत्र द्वारा, वर्तमान समय में हस्तशिल्प उद्योग के पुनरुत्थान की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। इसका ध्येय युवा पीढ़ी में भारतीय विरासत के प्रति गौरव जाग्रत करना है। नए उद्यमियों को दिशा देकर भारत के लुप्त होते व्यवसायों को पुनः स्थापित किया जा सकेगा।

प्राचीन व्यवसायों का पुनरुत्थान - महत्ता एवं आवश्यकता

‘पेरिप्लस मैरिस एरिथ्रै’ नामक प्रसिद्ध यूनानी रोमन ग्रन्थ में इस बात की व्याख्या की गयी है की भारतीय महासागर व्यापार क्षेत्र, विश्व का सर्वप्रथम, एकीकृत अंतराष्ट्रीय स्तर का व्यापार क्षेत्र था और इसका केंद्र भारत था ¹। इसमें भरुच, उज्जैन, असम, तमिल, भारत-चीन सीमा आदि इलाकों से व्यापक क्रय विक्रय

¹ पेरिप्लस मैरिस एरिथ्रै (पेरिप्लस ऑफ एरीथ्रियन सी), विकिपीडिया

के प्रमाण हैं। व्यवसायिक संगठनों के काफिले समुद्री एवं मैदानी रास्तों से होकर अरब और यूनान के अनेक देशों तक पहुँचते थे।

विदेशी आक्रांताओं की लूटपाट से भारत का वैभव घटा साथ ही यहाँ के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक ढाँचे को भी पूर्णतः परिवर्तित कर दिया गया। तत्पश्चात् ब्रिटिश गुलामी के साये में, भारतीय अर्थव्यवस्था पूरी तरह से ईस्ट इंडिया कंपनी के नियंत्रण में आ गयी। भारत से हर तरह का कच्चा माल निर्यात करके, यहाँ के संसाधनों को खोखला कर दिया गया। “भारत विश्व का सबसे धनी देश था और 17वीं सदी तक दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था था।”² भारत के खोये वैभव को लौटाने के लिए यह आवश्यक है कि सनातन भारतीय व्यवसायों एवं उद्योगों को पुनः स्थापित किया जाए।

वैश्वीकरण के दौर में आज किसान से लेकर लघु उद्यमी तक सभी अपने आप को मुख्य धारा के व्यापार से बहिष्कृत महसूस कर रहे हैं। कई शक्तिशाली देश अंतरराष्ट्रीय स्तर के संगठनों की नीतियों द्वारा अपने हितों को पूर्ण कर रहे हैं। ऐसे में यदि हम अपने देश के आधारभूत ढाँचे को मजबूत नहीं करेंगे तो पुनः गुलामी की बेड़ियों में जकड़े जाएंगे। भारत के प्राथमिक क्षेत्र (कृषि) और द्वितीय क्षेत्र (निर्माण एवं विनिर्माण) को सशक्त करने की जरूरत है क्योंकि यह हमारे अर्थव्यवस्था की नींव बनाते हैं। इसी के तहत जो भारतीय उद्योग हाशिया पर हैं, लुप्त हो चुके हैं अथवा व्यापक औद्योगीकरण के चलते क्षतिग्रस्त हुए हैं, उनका पुनः प्रवर्तन करना अत्यंत आवश्यक है। हस्तशिल्प या हस्तकला भी एक ऐसा ही अत्यंत महत्वपूर्ण भारतीय उद्योग है जिसका पुनरुत्थान आज सबसे ज्यादा प्रासंगिक है।

भारत का हस्तशिल्प उद्योग - परिचय एवं इतिहास

हस्तकला ऐसे कलात्मक कार्य को कहते हैं जो हाथ से या सरल औजारों की सहायता से बनाया जाता है। हस्तकला में कुशल कारीगर अपने हाथों से प्राकृतिक उत्पाद संगृहीत करते हैं और उनसे अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। निर्माण में किसी प्रकार की मशीन का उपोग नहीं किया जाता और न ही किसी आधुनिक उपकरण की मदद ली जाती है। भारत के प्रत्येक कस्बे में अनेक प्रकार के हस्तशिल्प के बेहतरीन उदाहरण मिलते हैं। भारत में हस्तशिल्प की कला अनोखी और विविध है। स्पष्ट बोध के लिए इस शोध पत्र में हस्तशिल्प के प्रकारों को दो मुख्य भागों में बांटा गया है:

1. कच्चे माल के आधार पर - इसमें हस्तशिल्प में काम लिए जाने वाले संसाधनों के आधार पर हस्तशिल्प को बेंत, बांस, लकड़ी, धातु, सोना और चांदी (मीनाकारी या तार काशी), मिट्टी, जूट, कागज़, कपड़ा (कशीदाकारी, कढ़ाई, जड़ाई), ऊन, पत्थर (नक्काशी), शंख, हड्डी और सींग, चित्रकारी, लाक, कांच, चीनी मिट्टी, तामचीनी (enamel) आदि में विभाजित किया गया है।³

2. क्षेत्रीय विशेषज्ञता के आधार पर - इसमें क्षेत्र और इलाके के हिसाब से हस्तशिल्प के प्रकार विभाजित कर जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर धोकरा हस्तशिल्प, जो की केवल आदिवासी इलाकों में निर्मित होती है इस तरह जो क्षेत्र आदिवासी आवासित हैं। “धोकरा हस्तशिल्प का सबसे पुराना रूप है और अपनी पारंपरिक सादगी के लिए जाना जाता है। धोकरा लोक चरित्र का प्रदर्शन करते अपने अनूठे सामानों के

²अंगस मैडीसन, *द वर्ल्ड इकॉनमी: ए मिलेनियल पर्सपेक्टिव* (विश्व अर्थव्यवस्था: एक हज़ार वर्ष का परिप्रेक्ष्य)

³ साभार - मैप्स ऑफ़ इंडिया.कॉम

लिए जाना जाता है।"⁴ इसी प्रकार से राजस्थान स्थित एक गाँव के नाम पर हस्तकला का नाम मोलेला टेरा कोटा है और यह विश्व भर में प्रसिद्ध है। यहाँ पर रहने वाला हर व्यक्ति एक कुशल शिल्पकार है, किन्तु फिर भी भारत में इसे पर्याप्त लोकप्रियता नहीं प्राप्त है।

हस्तशिल्प का इतिहास भी उतना ही प्राचीन है जितना की भारत का अपना इतिहास। चाहे वह चन्हूदड़ों में पाए गए पत्थर के मनके हों, खजुराहो और कोणार्क के मंदिरों में की गयी महीन नक्काशी हो या फिर अजंता और एलोरा की गुफाओं में बनी अद्भुत चित्रकारी। पुरातत्वविदों ने सिंधु घाटी सभ्यता की खोज में धातु मिट्टी कीमती पत्थर आदि से बने हुए कई हस्तकला उत्पादों के चिन्ह पाए हैं ये हमें बताता है की आज की कलात्मकता कई सदियों से वंशगत हमें विरासत में मिली है। जिस प्रकार से इतिहास में विशेषज्ञता प्राप्त कई केंद्र मिले हैं जैसे लोथल, नागेश्वर, बालाकोट ⁵ आदि; उन्हें पुनः स्थापित किया जाना चाहिए। संभव है की वह फिर से मुख्य धारा के हस्तशिल्प विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरें।

भारतीय घरेलू बाजार में हस्तशिल्प उद्योग की परिस्थिति

भारतीय बाजारों में उत्पाद की मांग तीन प्रमुख कारकों से प्रभावित है – वैश्वीकरण, मशीनीकरण-औद्योगीकरण और पश्चिमीकरण।

वैश्वीकरण द्वारा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के संभव होते ही सभी विदेशी कंपनियों ने अपने विनिर्माण के उद्योग उन देशों में बसाये जहां पर श्रमिकों की मजदूरी और कच्चा माल सस्ती दरों पर मिल सके। भारत भी एक ऐसा ही देश है जहां प्राकृतिक संसाधन और मानव संसाधन दोनों ही प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। भारत में एक व्यापक बाज़ार भी है जहां पर तैयार माल बेचा जाता है। इस प्रकार से पेप्सिको और एप्पल जैसी कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अपना प्रभुत्व स्थापित किया है। वहीं दूसरी ओर भारत में सं १९९१ तक लाल फीता शाही और राष्ट्रीयकरण की नीतियों ने भारत के देशज उद्यमियों के विकास को बाधित किया।

भारतीय हस्तशिल्प सस्ती गुणवत्ता और सस्ते दामों में बने थोक उत्पादों की तरह नहीं होते हैं। इसीलिए इन्हें केवल फैशन या विलासिता की वस्तुओं की तरह देखा जाने लगा है। एक बड़े स्तर पर हुई औद्योगिक क्रांति में, मशीनों द्वारा उत्पादन की क्षमता बढ़ी है। वह हस्तशिल्प में संभव नहीं है। किन्तु हस्तशिल्प के सभी कारीगरों को राष्ट्रीय स्तर पर संगठित कर उन्हें पेशावर व्यावसायिकता में ढालकर बड़ी कंपनियों के स्तर पर लाया जा सकता है। वर्तमान में भारतीय हस्त शिल्पकारों को जो मुख्य समस्या है वह तकनीकी नवीनीकरण में पिछड़ने के कारण है। उत्पाद को बनाने की कला में कुशल शिल्पकार को तकनीकी जानकारी नहीं होने के कारण डिजिटलीकरण के युग में बिक्री करने में समस्या तो आती ही है साथ ही उसकी पहुँच बहुत सीमित रहती है।

पाश्चात्य संस्कृति के प्रसार के साथ ही विदेशी उत्पादों को उपयोग में लेना एक तरह का लोकप्रिय चलन है और नामी ब्रैंड्स का आडम्बर आज हर किसी व्यक्ति लुभाता है। धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को भूल आज का युवा भौतिकतावादी जीवनशैली में उलझा हुआ है। आज का सामान्य भारतवासी किसी मल्टीनेशनल में बारह घंटे मेहनत करने पर तो गर्व महसूस करता है किन्तु उसे आंचलिक हस्तकला का

⁴ मैप्स ऑफ़ इंडिया.कॉम *भारत में हस्तशिल्प*, (२४ जुलाई २०१८)

<https://hindi.mapsofindia.com/india/handcrafts.html>

⁵ भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग १ (२०१८-१९) *राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद*

उद्योग शुरू करना या ग्रामीण परिवेश में रहकर हस्तशिल्प के काम को आगे बढ़ाना प्रतिष्ठित नहीं लगता है।

एक औसत भारतीय रोज़मर्रा के जीवन में जो उत्पाद काम में लेता है उसमें अल्प मात्रा में, न के बराबर, हस्तशिल्प के उत्पाद होते हैं। भारत की हस्तकला का सही मोल घरेलू बाजार में न मिल पाना अत्यंत दयनीय परिस्थिति की ओर संकेत करता है।

विदेश में मांग - भारतीय हस्तकला का निर्यात

विदेश में हस्तशिल्प उत्पादों की बहुत मांग है। इस ऊंची मांग का प्रमाण हस्तशिल्प निर्यात के आंकड़ों से मिलता है जो की भारत सरकार द्वारा हस्तकला निर्यात संवर्धन परिषद (The Export Promotion Council for Handicrafts - EPCH) की आधिकारिक वेबसाइट पर दर्शाये गए हैं।⁶ 2018-19 के दौरान भारत से हस्तशिल्प निर्यात में 6.44 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 3.80 बिलियन अमेरिकी डॉलर की वृद्धि हुई। इस अवधि के दौरान: \$51819 मिलियन* लकड़ी से निर्मित हस्तकला; \$ 389169 मिलियन कशीदाकारी और क्रॉचटेड सामान; \$ 234184 मिलियन हाथ के बुने वस्त्र और स्कार्फ; \$ 155161 मिलियन में नकली अनुकृत आभूषण और \$ 34519 मिलियन धातु के बने हस्तशिल्प।⁶ जो गुणवत्ता भारतीय हस्तशिल्प में है, उसे सदियों से विदेशियों ने पहचाना है। शुद्ध और प्राकृतिक तत्वों से भरपूर भारतीय हस्तशिल्प उपयोग में लेना विदेशों में बहुत प्रचलित है।

हस्तशिल्प का पुनरुत्थान - चुनौतियाँ एवं अवसर

हस्तशिल्प के पुनरुत्थान की शुरुआत बुनियादी स्तर पर, सामुदायिक रूप से करनी होगी। सबसे बड़ी विषमता परस्पर संबंध रखती है, वह है मांग और आपूर्ति के बीच का असंतुलन। जहाँ कहीं भी मांग है वहाँ तक एक आम शिल्पकार की पहुँच नहीं है। जो मुनाफा कलाकारों के कठिन परिश्रम को मिलना चाहिए वह बिचौलियों द्वारा हड़पा जाता है। कई हस्तशिल्प की मांग नहीं होने के कारण उस कला का भी अंत हो रहा है। ऐसे में सबसे मुख्य जरूरत प्रत्येक शिल्पकार की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुँच होना है। ई-कॉमर्स और ऑनलाइन व्यवसाय के दौर में तकनीक से अनभिज्ञ शिल्पकारों को डिजिटल मंच देना होगा। प्रत्येक कारीगर उस डिजिटल पोर्टल पर व्यवसाय कर सके और अपनी कला का सही मोल ले सके।

आज के युवा उद्यमी हस्तशिल्प व्यवसाय को स्टार्टअप के रूप में नहीं देखते। यही कारण है की इस क्षेत्र में कई अवसर होने पर भी यह पूरी तरह से उपेक्षित है। फ.एम.सी.जी. (Fast-moving consumers goods) यानी तेजी से बिकने वाली उपभोक्ता उत्पाद इस क्षेत्र में यदि पैकेजिंग और विनिर्माण की सामग्री शिल्पकारों से ली जाए तो ओर्गानिक पैकेजिंग का लाभ उपभोक्ता तक पहुंचेगा और उत्पादन का लाभ शिल्पकारों तक। एक अन्य चुनौती है दैनिक जीवन में हस्तशिल्प के उत्पादों के प्रयोग में कमी। इसके लिए हस्तशिल्प के महंगे दामों को जिम्मेदार ठहराया जाता है। दाम काम करने का एक तरीका यह है की जो कच्चा माल शिल्पकार काम में लेते हैं उस पर सरकार द्वारा सब्सिडी दी जाए। चीन से आने वाले सस्ती गुणवत्ता और सस्ते दाम के उत्पादों का बहिष्कार आम जनता की जिम्मेदारी है।

⁶ हस्तकला निर्यात संवर्धन परिषद (The Export Promotion Council for Handicrafts - EPCH)

<https://www.epch.in/>

* संख्या यू.एस. डॉलर में

हस्तशिल्प उद्योग के लिए सही अवसर तभी प्राप्त हो पाएंगे जब इसे संगठित रूप से व्यवस्थित किया जाएगा। स्वयं सहायता समूहों और स्वदेशी एन.जी.ओ (Non-Governmental Organizations) को कॉर्पोरेट कार्यालयों की तर्ज पर कार्य प्रणाली को अपनाना होगा क्योंकि तभी हस्तशिल्प बनाने का हुनर रखने वाले कारीगरों को विदेशी कंपनियों से भी अवसर मिलेंगे। ऐसे कई कारीगर हैं और कलायें हैं जिन्हें मान्यता ही प्राप्त नहीं है उन्हें भी सराहा जाएगा। उदाहरण के लिए कावड़ बनाने की कला आज लुप्त होती जा रही है। कांव्रिए भट्ट लोग गांव-गांव जा कर हिंदू पौराणिक कथाएं गा कर सुनाया करते थे। इसलिए उन्होंने अलमारीनुमा मंदिर तैयार किया जिनको वे लोग अपने कंधों पर उठा कर ले जा सकते थे। इस तरह की हस्तकला के पुनर्जीवन के लिए हमें अन्तः विषयक दृष्टिकोण से प्रयत्न करने होंगे। जैसे कावड़ कथाओं से शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार किया जा सकता है। आज की जरूरत यह भी है की हस्तशिल्प में नवोन्मेष के लिए विभिन्न क्षेत्रों की कलाकारों का आपस में सहयोग होना।

हस्तकला उद्योग के लिए एक चुनौती समाज द्वारा निर्धारित व्यवस्था भी है जिसके तहत प्रत्येक हस्तकला को सीखने की जिम्मेदारी केवल वर्ण विशेष तक ही सीमित मानी जाती है। श्री श्रीधर वेम्बू आज के युवा उद्यमियों के लिए मिसाल हो सकते हैं। उनकी कंपनी जोहो ग्रामीण इलाकों में विद्यार्थियों को निशुल्क कौशल प्रशिक्षण देती है। इस तरह के अवसर हस्तशिल्प के व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण के लिए संस्थान बनाकर दिए जा सकते हैं।

हस्तशिल्प उद्योग में रोजगार - इतिहास एवं भावी संभावनाएं

हस्तकला का हुनर सदियों से भारतीय कारीगरों को आत्मनिर्भर रूप से आजीविका कमाने का अवसर देता रहा है। भारत में एक समय पर, कृषि के बाद, हस्तशिल्प विनिर्माण ही सबसे ज्यादा रोजगार देने वाला क्षेत्र हुआ करता था। वर्तमान में लगभग सत्तर लाख शिल्पकार इस उद्योग से रोजगार में हैं। इस व्यवसाय का महत्व कम होने के कारण आज रोजगार के आंकड़े गिरते जा रहे हैं। निर्माण कार्य में लगने वाले शिल्पकारों के अलावा भी पैकेजिंग, मार्केटिंग, फंडिंग आदि में कई तरह के रोजगार के अवसर इस उद्योग द्वारा मिलते हैं। 67,000 से ज्यादा हस्तशिल्प निर्यात करने वाली संस्थाएं⁷ आज विश्वभर में हस्तशिल्प पहुंचा कर के मुनाफा कमाती हैं और कई नौकरियाँ भी उत्पन्न होती हैं। ऑनलाइन बाज़ार से अब किसी भी कोने इ-व्यवसाय करना संभव है और इससे रोजगार की संभावनाएं बढ़ गई हैं।

निष्कर्ष

रचनात्मकता से आम समस्याओं का हल निकालना, आम जीवन को सुखद बनाना और उचित दाम पर अच्छी गुणवत्ता देने पर ही आज की उद्यमिता आधारित है। यह सभी संभावनाएं हस्तशिल्प उद्यम में मौजूद हैं। आज का उद्यमी एक पर्यावरण के अनुकूल (ईको फ्रेंडली), श्रमिक की बेहतरी और कलात्मक सौंदर्य से भरपूर इस उद्यम में निवेश करके समाज, देश और पुरे विश्व की व्यापारिक नैतिकता को एक नई दिशा दे सकता है। सर्वे भवन्तु सुखिनः के नाद के साथ भारत की सनातन कला, उद्यमिता कौशल और व्यवसाय नीति, संपूर्ण विश्व को दिशा दे रही है। २१वीं सदी में भारत का उदय विश्व गुरु के रूप में होगा और उसके लिए सनातन हस्तशिल्प का पुनरुत्थान अत्यंत आवश्यक है।

⁷ भारतीय व्यापार पोर्टल, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, आधिकारिक वेबसाइट

संदर्भ सूची

1. अंगस मैडीसन, विश्व अर्थव्यवस्था: एक हज़ार वर्ष का परिप्रेक्ष्य (*द वर्ल्ड इकॉनमी: ए मिलेनियल पर्सपेक्टिव*)
2. भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग १ (2018-19), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
3. हस्तशिल्प निर्यात संवर्धन परिषद (*The Export Promotion Council for Handicrafts - EPCH*) <https://www.epch.in/>
4. पेरिप्लस मैरिस एरिथ्रै (*पेरिप्लस ऑफ़ एरीथ्रियन सी*), विकिपीडिया https://en.wikipedia.org/wiki/Periplus_of_the_Erythraean_Sea
5. भारतीय व्यापार पोर्टल, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, आधिकारिक वेबसाइट <https://www.indiantradeportal.in/>
6. इंडिया ब्रांड इक्विटी आर्गेनाईजेशन www.ibef.org
7. मैप्स ऑफ़ इंडिया.कॉम *भारत में हस्तशिल्प*, (२४ जुलाई २०१८) <https://hindi.mapsofindia.com/india/handcrafts.html>
8. हस्तशिल्प मेला: भारतीय परंपरा की शानदार झलक <https://isha.sadhguru.org/>
9. फिनांशल एक्सप्रेस.कॉम (*India's untapped made in India goldmine road map for crafts sector to a billion dollar opportunity*) www.financialexpress.com